अहिंसा किसे कहें ?

विपश्यनाचार्य सत्यनारायण गोयन्का

विपश्यना विशोधन विन्यास

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का का सार्वजनिक प्रवचन

[अहिंसा हाल, खार, मुंबई, १३ सितंम्बर १९९९]

अहिंसा किसे कहें?

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

अहिंसा किसे कहें?

धर्मप्रेमी सज्जनो, सन्नारियो!

आओ, समझें धर्म क्या है और उसे कैसे धारण किया जाता है। धर्म बुद्धिविलास का विषय नहीं है, वाणीविलास का विषय नहीं है, मनोरंजन का विषय नहीं है। धारण करे तो ही धर्म है।

धारण करे तो धर्म है, वरना कोरी बात।
सूरज उगे प्रभात है, वरना काली रात॥

जो धारण किया सो धर्म, अन्यथा तो केवल पुस्तकों का धर्म, ग्रंथों का धर्म, व्यासपीठ का धर्म, गुरु महाराज की वाणी का धर्म ही हो कर रह जाता है। जब तक धारण नहीं हुआ, तब तक धर्म नहीं हुआ। धारण करने के पहले यह समझना आवश्यक है कि धर्म है क्या? किसको धर्म कहें?

पिछले डेढ़-दो हजार वर्षों में इस देश में धर्म के नाम पर कितना अँधेरा फैला! जिन-जिन बातों का धर्म से दूर-परे का भी संबंध नहीं, धर्म के नाम पर वे ही हमारे सिर पर चढ़ बैठीं। और हम बड़े खुश होते रहे हैं कि हमने यह कर्मकांड पूरा कर लिया न! बस यही तो धर्म है। मंदिर वाले मंदिर में जाकर, मस्जिद वाले मस्जिद में जाकर, गिरजाघर वाले गिरजाघर में जाकर, पगोडा वाले पगोडा में जाकर, गुरुद्वारे वाले गुरुद्वारे में जाकर अपना-अपना कर्मकांड पूरा कर आये। बस, मेरा धर्म हो गया न, पूरा कर लिया न मैंने! धर्म के नाम पर किस भ्रांति में भटक गये हम?

हर संप्रदाय के अपने-अपने परंपरागत कर्मकांड, अपने-अपने तीज-त्यौहार, पर्व-उत्सव, रीति-रिवाज, व्रत-उपवास इत्यादि होते हैं। मना लिये न इन्हें, और क्या चाहिए? अरे भाई! धर्म का क्या संबंध इनसे? अपने जीवन में धर्म उतरा कि नहीं? आचरण में धर्म उतरा कि नहीं? जीवन व्यवहार में धर्म समाया कि नहीं? यदि नहीं तो ऐसा धर्म किस काम का?

धर्म की व्याख्या सभी महापुरुषों ने की है। भगवान महावीर ने भी की है। इसे पढ़ कर रोमांच होता है। हर महापुरुष की वाणी को पढ़ते हैं तो रोमांच होता है। पर उसे समझें तभी व्याख्या सार्थक होती है। लेकिन बिना समझे पाठ